श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ५

अक्टूबर - 12022

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. सच्ची लोकप्रियता प्रचार से नहीं ..... से मिलती है ।
२. स्वयं के सुख के लिये ..... एवं सुख केन्द्रित जीव क्या करेगा इसका कोई भरोसा नहीं ।
३. श्री नमिनाथ प्रभु ..... विमान में देव हुए ।
४. दूसरों को अच्छी न लगे ऐसी चलने की ..... रीत को अशुभ विहायोगति ।
५. औरों के ..... देखने से मन हमेशा कलुषित रहता है ।
६. बैरी भी ..... से वश होता है ।
७. संसार में से छूटने के लिये ..... और करुणा चाहिये ।
८. उपशम में से विवेक में और विवेक से ..... में प्रवेश किया ।
९. जीवन को सुख से भरपूर बनाना हो तो सबसे पहले ..... को सुखी बनाना पडता है ।
१०. आभोग याने उपयोग ..... याने उपयोग शुन्य ।
११. मानवी अपने जीवन को सुयोग्य रीत से बिताये तो अनेकों के लिये ..... के लिये निमित्त बन जाता है ।
१२. चौदह राजलोक के उच्च स्थान पर अनंत ..... को भोगने वाले सिद्ध हैं ।
१३. दान धर्मप्राप्ति का प्रथम ..... है ।
१४. वेश्यागमन के व्यसन से जीव दुराचारी ..... वीर्यहीन बने हैं ।
१५. जीवदया के सच्चे परिणाम के बगैर जीवन में सच्ची ..... असंभवित है ।
१६. सभी जीव को सुख की इच्छा है परंतु सुख मिलता नहीं, दुःख पीछा छोडता नहीं, इसका मूल कारण ..... है ।
१७. श्री कुंथुनाथ प्रभु चैत्र वदि ..... को मोक्ष में गये ।
१८. यदि ..... जैसा जीवन बनाना हो तो जीवन को सत्वर व्यसनो से मुक्त बनाना ही पडेगा ।
१९. चंद्रध्वज ने ..... ऐसी अपनी बहन चद्रयशा का विवाह सुजात से कर दिया ।
२०. जीव सर्वत्र अपयश और अपकीर्ति ..... नामकर्म के उदय से पाता है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. धनेश्वर का गौण नाम क्या है ?
२. दुःख पूर्वक जाग सके तो निद्रा कौनसी ?
३. सर्वविरति याने क्या ?
४. सुषमा का मस्तक लेकर जंगल की तरफ कौन दौडता है ?
५. किसको निरखने के लिये मेरे नयन तरस रहे है ?
६. जीवन का अनमोल आभूषण क्या है ?
७. दुःख पीछा नहीं छोडता उसका मूल कारण क्या ?
८. सोने की लंका का स्वामी कौन ?
९. कष याने संसार तो आय याने क्या ?
१०. क्षायिक समकित के स्वामी कौन ?
११. किसके प्रभाव से देश में हुई मरकी शांत हुई ?
१२. एकाध भी इन्द्रिय जिस जीव की कम है, वह क्या कहलाता है ?
१३. लालन राजा किस नगर का राजा है ?
१४. कौतुक से वरघोडा, सरकस, या नाटक वगैरह देखने से कौनसी क्रिया लगती है ।
१५. श्री अरनाथ प्रभु का लांछन क्या है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) विकल २) विस्या ३) अयलं ४) किलिट्ठ ५) किरियाओ ६) मसगा ७) सग्गे ८) मिच्छत ९) ठांणं १०) पारितावणी ११) बहुमाणं १२) अणंतसो १३) अपचख्खाण १४) संपई १५) सतविहं १६) कुखगई १७) धम्मवर १८) समुदाण १९) गंधहत्थीण २०) दुस्सर

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) सिंहविक्रीडित	१) अपटुडेट	६) कर्म	६) दान
२) साध्वी	२) रिष्टा	७) विवेक	७) तप
३) वर्धापन उत्सव	३) पर्वत	८) ब्राह्मण पुत्र	८) आलोचना
४) चोर	४) अद्‌भुत संयमपालन	९) नारकी	९) सुजात
५) गर्भपात	५) दामिनी	१०) जगडुशा	१०)लांछन

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. पाँच इन्द्रियों के विषय कितने ?
२. नारकी के भेद कितने ?
३. क्रियायें कितनी है ?
४. श्री मल्लिनाथ प्रभु की कितनी हजार साध्वीयाँ थी ?
५. आश्रव तत्व के कुल भेद कितने ?
६. नोकषाय कितने है ?
७. पाप कितने प्रकार से भोगा जाता है ?
८. श्री अरनाथ प्रभु का दीक्षा पर्याय कितने हजार वर्ष का था ?
९. मघा नारकी की लम्बाई कितने राज है ?
१०. श्री शांतिनाथ प्रभु के भव कितने ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. प्रथम हृदय में से क्रूरता जाय फिर धर्म का वास होता है ।
२. अरिहंत की माता पाँचवे स्वप्न में पुष्पों की दो मालयें देखती है ।
३. जयणा और करुणा के लिये नवतत्व का गहरा ज्ञान चाहिये ।
४. कुंथुनाथ प्रभु स्वयं छठवे चक्रवर्ती थे ।
५. दुर्भग नाम कर्म के उदय से जीव किसी को भी अच्छा न लगे ।
६. संगम के भव में दिये हुए खीर के दान से जगडुशाह का नाम आज भी गूंज रहा है ।
७. तीन इन्द्रियवाले शरीर की प्राप्ति बिच्छु पतंगो को होती है ।
८. नारी ज्यादा में ज्यादा पाँचवी नरक तक ही जा सकती है ।
९. धर्मघोष मंत्री की पत्नि का नाम प्रियंगु था ।
१०. मदिरा तो तनरुपी काष्ट को जलाने में अग्नि समान है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. शील को देव भी नमस्कार करते हैं ।
२. "धर्म बताओ, नहीं तो इस के जैसे तुम्हारे भी हाल होंगे "।
३. हिंसा, असत्य, चोरी, अब्रम्ह और परिग्रह इनका त्याग ये व्रत है ।
४. नीम या बबुल बोने वाले को आम कहाँ से मिले ?
५. उन सभी को मन, वचन, काया के द्वारा इन तीन प्रकार से मैं वंदन करता हूं ।
६. साहेब ! उस जीव का क्या हुआ होगा और साहेब मेरा क्या होगा ?
७. कितना अद्‌भूत महिमा है जीवदया का ।
८. सम्यक्त्व सहित बारह व्रत की आराधना की ।
९. अतः एक व्यसन अनेक व्यसनों को खींच लाता है ।
१०. पात्रता योग्यता होते हुए भी लाभ न होने दे वह लाभांतराय कर्म ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. पाप कर्म में आते ज्ञानावरणीय कर्म के भेद समझाओ ।
२) चोरी का दूषण और मदिरा का व्यसन
३. शक्रस्तव की ८ वी , ९वी गाथा समझाओ ।
४) श्री शांतिनाथ प्रभु का मेघरथ राजा का भव ।
५. नरक के जीवों की व्यथा ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडर्मी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com